विश्व शांति दिवस के अवसर एवं विश्व विख्यात आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के 84वें जन्मदिवस पर सामाजिक सद्भाव सम्मेलन का भव्य आयोजन

विभिन्न मत–सम्प्रदायों के धर्माचार्यों ने स्वामी जी को दी श्रद्धांजलि

विश्व शांति दिवस एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का 84वाँ जन्मदिवस दिनांक 21 सितम्बर, 2022 को समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन सार्वदेशिक सभा के सभागार में हुआ जिसमें विभिन्न मत–सम्प्रदायों एवं आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील मुनि जी महाराज ने की। मंच का कुशल संचालन युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी

आदित्यवेश जी ने किया।

इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, जैन सन्त आचार्य विवेक मुनि जी, बौद्ध प्रतिनिधि तिब्बतियन पार्लियामेंट के डिप्टी स्पीकर आचार्य येशी जी, बहाई मत के प्रतिनिधि और लोटस टेंपल दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. ए. के मर्चेंट जी, सरदार धरम सिंह निहंग जी, मौलाना शाहीन कासमी जी के अतिरिक्त वरिष्ठ संन्यासी स्वामी यज्ञमुनि जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, आर्य

प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, सामाजिक कार्यकर्ता श्री हवा सिंह हुड्डा जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष श्री राजेश याज्ञिक, डॉ लाल रत्नाकर (गाजियाबाद), सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रेम बहुखंडी (देहरादून), बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, प्रिंसिपल आजाद सिंह बांगड़ (सोनीपत), श्री निर्मल कुमार शर्मा (गाजियाबाद) सहित अनेक महानुभावों ने स्वामी अग्निवेश जी को याद करते हुए अपने–अपने विचार रखे।

आज के कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे भारतीय सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील मुनि जी महाराज ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी केवल एक व्यक्ति नहीं थे बल्कि एक विचारधारा थे। मैं सनातनी होकर भी उनके विचारों का सम्मान करता था। वे सदैव सत्य बोलते थे, उनका हृदय पवित्र एवं निर्मल था। उन्होंने एक घटना सुनाते हुए कहा कि स्वामी जी एक बार बहरीन गये हुए थे और मैं भी उनके साथ था। स्वामी जी ने वहाँ के खलीफा को सत्यार्थ प्रकाश एवं दोशाला भेंट किया तो वहाँ पर उपस्थित लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। स्वामी जी एक निर्भीक एवं साहसी संन्यासी थे वे जो ठान लेते थे उसे करके ही मानते थे। स्वामी अग्निवेश जी को मैंने काफी नजदीक से देखा है वे जब कभी भी मुसलमानों की सभा में जाते थे तो उनके धर्म में फैली हुई बुराईयों का जमकर खण्डन करते थे, मुसलमानों की सभा में मांसाहार के खिलाफ बोलना कोई आसान बात नहीं है, परन्तु स्वामी अग्निवेश जी एक निर्भीक सन्त की तरह मांसाहार के खिलाफ बोलते थे और मांसाहार के दुष्प्रभाव को वैज्ञानिक तरीके से समझाने का प्रयास करते थे, स्वामी जी के विचारों को सुनकर उपस्थित सभी लोग तालियों से उनका सम्मान करते थे। क्योंकि स्वामी जी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे अनुयायी थे और वे सत्य बोलने से कभी भी डरते नहीं थे। स्वामी अग्निवेश जी का मानना था कि हमारा समाज सभ्य समाज बने जिसमें सभी लोग आपस में मिलकर देश की उन्नति का संकल्प लेकर कार्य करें और देश को आगे बढ़ायें। स्वामी अग्निवेश जी जब भी सत्य बोलते थे तो कई लोगों को ऐसा लगता था कि वे सनातन धर्म का विरोध कर रहे हैं, परन्तु ऐसा नहीं था वे जो भी बात रखते थे पूर्ण वैज्ञानिक तरीके से रखते थे। मुनि जी ने एक और घटना सुनाते हुए कहा कि रामलीला का समय था तो मैंने स्वामी जी को उसमें आने के लिए आमंत्रित किया जिस पर स्वामी जी ने कहा कि रामलीला में मेरा क्या काम है, मैं ऐसे आयोजनों नहीं जाता जहाँ अपने ही महापुरुषों का मजाक बनाया जाता हो। मैंने उन्हें आग्रह

पूर्वक समझाया कि आप जरूर आयें मैं भी रामलीला में वही दिखाता हूँ जो राम का सही आदर्श स्वरूप है। पाखण्ड का मैं भी विरोधी हूँ। हमारे आग्रह को स्वीकार करते हुए स्वामी जी उस कार्यक्रम में आये और हमारे द्वारा दिखाये गये रामलीला के कार्यक्रम को उन्होंने सराहा। उस कार्यक्रम में जब स्वामी जी आये तो मैं उनसे बहुत अधिक प्रभावित हुआ। कुछ वर्ष पूर्व स्वामी जी ने ही सर्वधर्म संसद का एक पौधा लगाया जिसकी देख–रेख आज सभी धर्मों के नेताओं के सहयोग से मेरे

कंधों पर है। स्वामी जी ने जो पौधा लगाया वह आज वट वृक्ष बनकर तैयार हो रहा है। स्वामी अग्निवेश जी हमारे नेता थे, मैं उनका बहुत ही ज्यादा सम्मान एवं आदर करता हूँ। सर्वधर्म संसद की बैठक हो या मेरा जहाँ कहीं भी प्रवचन आदि होता है मैं अपने नेता स्वामी अग्निवेश जी को अवश्य याद करता हूँ, आज उनकी कमी मुझे बहुत खल रही है। क्योंकि वे सच्चे आर्य एवं

पिछले पृष्ठ का शेष

विभिन्न मत–सम्प्रदायों के धर्माचार्यों ने स्वामी जी को दी श्रद्धांजलि

निर्भीक संन्यासी थे। आज इस मंच के माध्यम से मैं आग्रह कर रहा हूँ कि स्वामी अग्निवेश जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए स्वामी आर्यवेश जी आगे आयें और समाज में पनप रही संकीर्ण मानसिकता, जातिवाद, नशाखोरी, धार्मिक उन्माद, पाखण्ड एवं अन्धविश्वास सहित अनेक बुराईयों के खिलाफ आवाज उठायें और इन बुराईयों से समाज को निजात दिलाने में नेतृत्व प्रदान करें।

बौद्ध प्रतिनिधि तिब्बतियन पार्लियामेंट के डिप्टी स्पीकर आचार्य येशी स्वामी अग्निवेश जी को याद करते हुए कहा कि स्वामी जी जब भी दलाई लामा जी से मिलते थे तो मुझे भी उन्हें मिलने का अवसर मिलता था। हमारे धार्मिक नेता दलाई लामा जी स्वामी जी को अत्यधिक सम्मान दिया करते थे। स्वामी जी में यह विशेषता थी कि वे सभी मतों के अनुयायियों को साथ लेकर चलने में अग्रणी रहते थे। उनका व्यक्तित्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का था, आज उनकी कमी हमें महसूस हो रही है।

बहाई मत के प्रतिनिधि और लोटस टेंपल दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. ए. के मर्चेंट ने स्वामी जी को स्मरण करते हुए बताया कि स्वामी जी के साथ लगभग 33 वर्ष से मेरा सम्पर्क रहा और उनके साथ मुझे अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में कई बार सम्मिलित होने का अवसर मिला। वे पूरे समाज में सौहार्द, सद्भाव एवं मैत्री स्थापित करना चाहते थे। गरीबों के लिए संघर्षरत रहे। ऐसे महान व्यक्तित्व के जन्मदिवस पर हम सभी को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए।

जैन सन्त आचार्य विवेक मुनि जी ने स्वामी अग्निवेश जी महाराज को याद करते हुए कहा कि वे बहुआयामी, क्रांतिकारी आर्य संन्यासी का जन्मदिन मना रहे हैं। स्वामी जी सदैव गरीब, मजदूर, असहाय, बेसहारा लोगों की लड़ाई लड़ते रहे। वे सर्वधर्म के लिए कार्य करते रहे। जहां कहीं भी धार्मिक टकराव का माहौल बनता था, स्वामी जी वहां पर सभी धर्मों के संतों को लेकर जाते थे और समस्या का समाधान करते थे। आज उनकी अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है। वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता की बात उठाते थे। वे सदैव सत्य की बात करते थे तो कुछ लोगों को लगता था कि वे पाखण्ड पर प्रहार कर रहे हैं।

मौलाना शाहीन कासमी जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी सच्चे आर्य थे। स्वामी जी आर्य के महत्व को समझते थे, आर्य का मतलब है सत्य को स्थापित करना। वे सभी को मोहब्बत से रहने की बात करते थे। वे स्वामी दयानन्द जी के मिशन को लेकर आगे बढ़ रहे थे। मैं स्वामी जी के विचारों से प्रभावित होकर उनसे 20 साल पहले जुड़ा और आज भी उनके विचारों को आगे बढ़ाने में लगा हूँ।

डॉ लाल रत्नाकर जी ने कहा कि स्वामी जी के साथ मैं सदैव जुड़ा रहा। वर्तमान में पूरे देश में जो हो रहा है उससे स्वामी अग्निवेश जी पूरी तरह से असहमत थे। स्वामी जी सामाजिक सद्भाव के समर्थक थे। आज वे होते तो निश्चित रूप से वर्तमान में फैली बुराईयों के खिलाफ लड़ाई लड़ते और हम सबका नेतृत्व करते।

सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेश याज्ञिक ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने राजा राममोहन राय के बाद सती प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई। मैं उनसे बचपन में ही प्रभावित था। स्वामी जी के मिशन को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अपने क्षेत्र में उनके विचारों और कार्यों को हम सबको करना चाहिए। हम सौभाग्यशाली हैं कि उनके साथ मुझे कार्य करने का मौका मिला। आज स्वामी जी की सबसे ज्यादा जरूरत महसूस हो रही है।

सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रेम बहुखंडी ने कहा कि आज के 20–25 साल बाद लोगों को विश्वास नहीं होगा कि स्वामी अग्निवेश जी जैसा कोई व्यक्ति था। अभी हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय के आये निर्णय की निंदा करते हुए उन्होंने कहा कि यदि आज स्वामी जी होते तो जज के कान के नीचे आवाज जरूर आती और स्वामी जी उसके खिलाफ लड़ाई अवश्य लड़ते। स्वामी जी धार्मिक नेता होने के बावजूद भी गरीब, मजदूर की लड़ाई लड़ते थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विरजानन्द जी एडवोकेट ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी को आज हम सब उनके जन्मदिन पर याद कर रहे हैं और आज विश्व शांति दिवस भी है, परन्तु क्या पूरे विश्व में शांति है। स्वामी जी ने सती प्रथा, बंधुआ मजदूर, नशे, अन्धविश्वास एवं पाखण्ड सहित अनेक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। जिस कारण से उन पर कई बार हमले भी हुए। स्वामी जी विश्व शान्ति के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी जिस प्रकार का कार्य करते थे आज उनके विचारों एवं कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए स्वामी आर्यवेश जी नेतृत्व करें जिससे समाज में फैली विषमता की लड़ाई लड़ी जा सके।

पुरोहित सभा दिल्ली के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी अदभुत व्यक्तित्व थे। इमरजेंसी के दौर से लेकर उनके जीवन के अनेक कार्यों को याद करते हुए बताया कि स्वामी अग्निवेश जी और स्वामी इंद्रवेश जी ने अनेक ऐसे कार्य किये जिनसे हम सबको प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए।

वरिष्ठ संन्यासी स्वामी यज्ञमुनि जी ने स्वामी अग्निवेश जी को याद करते हुए कहा कि स्वामी जी वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का असली स्वरूप मानव मात्र के सामने रखा।

बहन पूनम आर्या जी ने स्वामी अग्निवेश जी के कार्यों को बताते हुए कहा कि उन्होंने स्वामी दयानन्द जी के मिशन को आगे बढ़ाने में अपना पूरा जीवन लगा दिया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी मानवता के प्रबल समर्थक थे। आज धर्म के नाम पर कैसी–कैसी घिनौनी हरकतें हो रही हैं, महिलाओं का उत्पीड़न हो रहा है, नशे का जाल बढ़ता जा रहा है। आज यदि स्वामी जी होते तो आगे बढ़कर इन बुराईयों के खिलाफ लड़ाई लड़ते।

सरदार धरम सिंह निहंग जी ने स्वामी जी को याद करते हुए कहा कि उनसे मेरा परिचय 2014 में हुआ। स्वामी जी हमेशा सबकी भलाई का कार्य करने के बारे में विचार–विमर्श करते थे। वे मानवता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि अनेक सामाजिक मुद्दों पर स्वामी जी के विचारों को सुनकर मैंने सोचा ये तो बहुत बड़े सन्त हैं। उन्होंने कहा कि उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए स्वामी आर्यवेश जी आगे आएं तो हम सब अच्छा कार्य कर सकते हैं।

प्रिंसिपल आजाद सिंह ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी क्रान्ति थे। वे हर समय समाज की चिंता करते थे। वे हमेशा अपनी बात को शान्ति तरीके से रखते थे। स्वामी जी मानव कल्याण के लिए जिये और समाज से बुराइयों को दूर करने में लगे रहे।

डॉ नरेन्द्र वेदालंकार जी ने स्वामी अग्निवेश जी को याद करते हुए कहा कि आज उनका न होना हम सबको खल रहा है। स्वामी अग्निवेश जी की परिकल्पना आर्य राष्ट्र बनाने की थी, लेकिन कुछ कुंठित मानसिकता के लोग उनकी हमेशा टांग खींचते रहे। स्वामी जी ने बंधुआ मजदूरी प्रथा के खिलाफ इतना अधिक कार्य किया जिसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। वे हमेशा मनुष्य बनने की प्रेरणा देते थे।

गाजियाबाद से पधारे श्री निर्मल कुमार शर्मा जी ने स्वामी अग्निवेश को सर्वश्रेष्ठ संन्यासी बताया। वे कुरीतियों के विरोधी थे, वे हमेशा वैज्ञानिक तथ्य के आधार पर अपनी बात रखते थे।

इस कार्यक्रम में दिल्ली तथा आस–पास के प्रान्तों से जिन प्रमुख महानुभावों ने भाग लिया उनमें मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या, श्री रामनिवास आर्य (नारनौल), स्वामी सोम्यानन्द जी, वयोवृद्ध नेता श्री मामचन्द्र रेवाड़िया, श्री बाबूराम शर्मा विभाकर, श्री रामपाल आर्य (नरेला), तेजपाल सिंह मल्लिक, श्री सुन्दर शास्त्री, श्री राम कुमार सिंह आर्य, श्री ऋषिपाल शास्त्री, श्री अवनीश कुमार, श्री कैलाश, श्री विष्णुपाल, श्री जावेद जी, श्री अशोक वशिष्ठ, श्री मकेन्द्र कुमार आर्य, श्री सोनू तोमर, श्री भानू प्रताप, श्रीमती रमा देवी, श्री अर्जुन लाल, श्री सुरेश यादव, श्री रघुवीर सिंह, श्री हरेन्द्र मलिक, श्री तोताराम भील, श्री विजेन्द्र हुड्डा, श्री मनोज आर्य, श्री योगेश आर्य, श्री उमेश कुमार आर्य, श्री रामशरण, सुधा कुमारी, श्री सुधीर कुमार शाह, सारिका क्षेत्री, नेहा कुमारी मिश्रा, श्री गोविन्द, श्री अनिल, श्री करणदीप सिंह, मोहम्मद नानक खान, निसार अहमद, श्री सुभाष दुआ, श्री रणवीर सिंह मलिक, डॉ. राजेन्द्र सिंह सहित अनेक नाम उल्लेखनीय हैं।